

## युवा प्रभाग-दिव्य दर्पण ग्रुप अक्टूबर, 08 मास के पुरुषार्थ की प्वाइंटस

अक्टूबर मास का चार्ट: हमने जैसे सितम्बर मास में विशेष जीवन की छोटी-छोटी बातों में परमात्म शक्तियों की अनुभूति की और सम्पूर्ण अनासक्त बनने का लक्ष्य रखा था उसी प्रकार हम इस मास में भी उस लक्ष्य को और पक्का करेंगे।

**विधि :**

चार सप्ताह के लिए चार परिस्थितियों में परमात्म शक्तियों का अनुभव करेंगे और चार बातों में सम्पूर्ण अनासक्त बनेंगे :

सप्ताह	परिस्थिति	शक्ति	दृढ़ संकल्प	दिव्य दर्पण की धारणा	सम्पूर्ण अनासक्त
प्रथम	नाराज को राजी करना	स्नेह	राज को जानकर राजी रहना है	किस विधि से नाराज को राजी किया	तन से
दूसरा	प्रतिकूल वायुमण्डल को अनुकूल बनाना	समाने की और समेटने की शक्ति	स्व स्थिति से परिस्थिति को पार करना	लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करते रहना – अमृतवेले से एक पॉइन्ट को निश्चित कर, सारे दिन अभ्यास कर अनुभव लिखना	मन से
तीसरा	अशुद्ध आत्माओं के वार से बचना	पवित्रता	मेरी पवित्र दृष्टि बेदाग हीरा बनाने वाली है	प्रतिदिन का स्वमान कम से कम 21 बार लिखें	धन से
चौथा	परमात्मा के साथ का अनुभव करना	सत्यता	सच्चे दिल पर साहब राजी	कौन से स्वरूप या सम्बन्ध से बाबा को साथ एवं कम्बाइंड रखा – उसका अनुभव लिखें	सम्बन्ध से

❖ फ्रेमबुक में ऊपर चार पंक्तियों में निम्नलिखित बिन्दु लिखकर उसका परिणाम प्रतिदिन रात को सोने से पहले लिखें:

1. गुड मोर्निंग - 3.30
2. अमृतवेला - 3.30 से 4.45, बाबा के कमरे में
3. व्यायाम/पैदल - हाँ जी
4. ट्रैफिक कंट्रोल - 5
5. मुरली क्लास - क्लास में सुनी
6. अव्यक्त मुरली पढ़ी? - हाँ जी
7. स्वमान की स्मृति - बहुत अच्छी
8. परिस्थिति में विजयी बनें - 70%
9. सम्पूर्ण अनासक्त रहें - 80%
10. गुड नाइट- 10.30

■ परिस्थिति में विजयी बनें - हम इतने भाग्यवान हैं जो परिस्थितियों को पार कराने के लिए स्वयं सर्वशक्तिवान भगवान मददगार है। हमारे लिए कोई भी परिस्थिति असम्भव नहीं, मुश्किल नहीं। संसार के विघ्नों को मिटाने के लिए बाबा ने हमें निमित्त बनाया है। परिस्थिति में हम कितना विजयी बनें वो % में नोट करना है। उसके लिए विशेष अमृतवेले हम अभ्यास करेंगे उस शक्ति का जो परिस्थिति में विजयी बनने के लिए बताई है।

अमृतवेले का अभ्यास : अमृतवेले विशेष परमधाम निवासी बाबा के पास जाकर कुछ मिनट के लिए उस शक्ति का अनुभव करें जो दी गई है। उस शक्ति से भरपूर होकर फिर कुछ मिनट उस शक्ति को समस्त संसार में फैलायें।

■ सम्पूर्ण अनासक्त:-

1. तन से सम्पूर्ण अनासक्त : - यह तन प्रभु की अमानत है जो हमें सेवा के लिए मिला है। शरीर को ज्यादा सम्भालना, श्रीमत प्रमाण कर्म न करना, श्रृंगार करना आदि, यह जैसे अमानत में ख्यानत डालना है। आपने कितना % अनासक्त रह कर तन को सम्भाला, वह लिखना है।
2. मन से सम्पूर्ण अनासक्त : मन हमें मनमनाभव हो रहने के लिए मिला है। अगर मन किसी व्यक्ति, वस्तु, वैभव, बात की ओर आकर्षित होता है तो यह अमानत में ख्यानत है। आप कितने % अनासक्त रहे, यह लिखना है।
3. धन से सम्पूर्ण अनासक्त : धन हमें ईश्वरीय सेवा अर्थ और सर्व का कल्याण करने के लिए मिला है। धन कमाने में ही समय जाता है या अविनाशी कमाई भी करते हैं? श्रीमत अनुसार धन का सदुपयोग करते हैं? इसमें चेक करें हम कितना % अनासक्त रहे?

4. सम्बन्ध से सम्पूर्ण अनासक्त: क्या योग करते समय किसी विशेष सम्बन्ध से कोई भी देहधारी याद आता है? ये सम्बन्ध सेवा अर्थ मिले हैं। किसी सम्बन्ध में मेरेपन का भाव तो नहीं आता? कितना % अनासक्त रहे?

❖ दिव्य दर्पण की धारणाओं की जो प्वाइन्ट्स लिखी हैं वे फ्रेम बुक में आज की मुरली के पश्चात् इस प्रकार लिखना है:

1. प्रथम सप्ताह- किस विधि से नाराज को राजी किया: सभी आत्माओं से हमें सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट लेना है। कोई भी आत्मा हम से नाराज न हो। अगर नाराज होते भी हैं तो किसी भी प्रकार से हमें उन्हें राजी करना है। उनकी नाराजगी का राज समझ लेना है और परिवर्तन करना है।
2. दूसरा सप्ताह- लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करते रहना – अमृतवेले किसी एक पोइन्ट को निश्चित कर, सारे दिन अभ्यास कर अनुभव लिखना: हम असाधारण आत्माएं हैं। इस विश्व नाटक के हीरो पार्टधारी हैं, ड्रामा की हर सीन हीरो पार्टधारी को ही favour करती है। हमारे लिए कोई भी परिस्थिति प्रतिकूल नहीं। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर व्यक्त में आकर कर्म करना है।
3. तीसरा सप्ताह- स्वमान लिखें: शिल्पकार बाबा मुझ आत्मा को पूज्यनीय मूर्ति बना रहे हैं, यह अपने व्यवहार से प्रत्यक्ष करें और निरन्तर पाँच स्वरूपों में से किसी एक स्वरूप का अभ्यास करना है। हर आत्मा को भी उसी स्वरूप से देखना है जिससे उसकी भी अशुद्धि नष्ट हो जाए।
4. चौथा सप्ताह- कौन-से स्वरूप से बाबा को साथ एवं कम्बाइंड रखा, उसका अनुभव लिखें : मनुष्य आत्माओं का साथ तो सारा कल्प रहेगा परन्तु केवल यही छोटा-सा संगमयुग है जिस में हम पद्मापद्म भाग्यवान आत्माओं को ही परमात्मा के साथ का अनुभव होता है। हर पल उसी के साथ कम्बाइंड रहकर हर कर्म करना है।

स्वमान:

नाराज को राजी :	16. मैं आत्मा पवित्रता का सूर्य हूँ।
1. मैं आत्मा सदा खुशनसीब हूँ।	17. मैं आत्मा सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण हूँ।
2. मैं आत्मा राजयुक्त हूँ।	18. मैं आत्मा पवित्रता का फरिश्ता हूँ।
3. मैं आत्मा सदा प्रसन्नचित्त हूँ।	19. मैं आत्मा परम पवित्र हूँ।
4. मैं आत्मा आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हूँ।	20. मैं आत्मा बेदाग हीरा हूँ।
5. मैं आत्मा सर्व की मनोकामनाएं पूर्ण करनेवाली हूँ।	21. मैं आत्मा परम पूज्यनीय हूँ।
6. मैं आत्मा रहमदिल हूँ।	<b>परमात्मा का साथ:</b>
7. मैं आत्मा स्नेह की मूर्ति हूँ।	22. मैं आत्मा परमात्मा की छत्रछाया में हूँ।
<b>प्रतिकूल को अनुकूल :</b>	23. मैं आत्मा कम्बाइंड स्वरूप हूँ।
8. मैं आत्मा हीरो पार्टधारी हूँ।	24. मेरा बेकबोन स्वयं भगवान है।
9. मैं आत्मा मास्टर रचयिता हूँ।	25. मैं सदा ज्ञानसूर्य के सामने रहनेवाली सूर्यमुखी हूँ।
10. मैं आत्मा विश्व परिवर्तक हूँ।	26. मैं आत्मा बाबा के नयनों का नूर हूँ।
11. मैं आत्मा शुभ चिन्तक हूँ।	27. हजार भुजाओं वाला भगवान मुझ आत्मा का साथी है।
12. मैं सच्चा सोना हूँ।	28. मैं आत्मा परमात्म प्यार में समाई हुई हूँ।
13. मैं अवतरित आत्मा हूँ।	29. मैं आत्मा परमात्मा राम की सच्ची सीता हूँ।
14. मैं आत्मा सर्व से न्यारा और प्रभु का प्यारा हूँ।	30. मैं आत्मा सदा परमात्मा के साथ से सेफ हूँ।
<b>अशुद्ध आत्माओं से बचना :</b>	31. मैं और मेरा बाबा कभी जुदा हो नहीं सकते।
15. मैं आत्मा पवित्रता का अवतार हूँ।	

Phone No: (079) 26444415, 26460944 Email: [bkyouthwing@gmail.com](mailto:bkyouthwing@gmail.com) Website: [www.bkyouth.org](http://www.bkyouth.org)

**खुशखबर:** प्रतिदिन स्वमान प्राप्त करने के लिए **JOIN DivyaDarpan** लिखकर 567678 पर SMS करें। यह सेवा नि:शुल्क है।